साहित्योत्सव 2016
festival of letters
15-20 February 2016

क़व्वाली
Qawwali

निज़ामी बंधु
Nizami Brothers

18 February 2016 at 06.00 p.m.
Rabindra Bhawan Lawns

साहित्य अकादेमी
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग,
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23386626/27/28
फ़ैक्स : 091-11-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
वेबसाइट : www.sahitya-akademi.gov.in

SAHITYA AKADEMI
Rabindra Bhawan, 35 Ferozeshah Road,
New Delhi - 110001
Phone: +91 11 23386626-28
Fax: +91 11 23382428
Email: secretary@sahitya-akademi.gov.in
Website : www.sahitya-akademi.gov.in

Qawwali is a form of devotional singing which branched out into 'Khayal' singing as well. Qawwali derives it's form from the mystic traditions of the Sufi order where music is a powerful medium to connect the human spirit with the universal spirit. A Qawwali has become part and parcel of the strong musical tradition (Classical & Light) of our country.

Nizami Brothers are one of the most famed Qawwali singers, performing in the Sufi style. They belong to the legendary Sikanderabad Gharana, which gave Indian musical giants such as Ustad Qudrattullah Khan Sahab and Ustad Kifayatullah Khan Sahab. Being the sons of Aziz-uzzaman, Ghulam Sabir Nizami and Ghulam Waris Nizami learnt singing from late Qawwali Samrat Ustad Inam Ahmed Khan 'Mehboob Ragi'. Haji Ustad Altaf Hussain Khan Sahab 'Padma Bhushan' of the acclaimed Khurja Gharana, who were his maternal grandfather and maternal uncle respectively. The ancestors of these traditional Gharanas were topmost classical vocalists, dhrupadiyas, composers, musicologists and poets since more than 700 years. Ghulam Sabir Nizami and Ghulam Waris Nizami (Nizami Brothers) belong to the same sect of traditional Qawwali singers. He has an equal command over traditional Qawwali as well as modern Qawwali trend.

Nizami Brothers Qawwal were the first Indian Qawwals to have performed at Royal Albert Hall, London. Nizami Brothers Qawwal were the first Indian Qawwals to have performed at Royal Albert Hall, London. They have also performed at the Ruhaniyat Festival, Rang Festival, Jashn-e Qawwali Festival in Bhopal, Jashn-e-Qawwali, Lucknow, Eid Ki Sham a live concert in Delhi, Amrit De Sur in Amritsar, Delhi International Film Festival, Swami Haridas Sammelan in Vrindavan, Ek Shaam Mehboob-e-Ilahi Ke Naam in Dargah Hazrat Nizamuddin Aulia and Urdu Festival in Mauritius.

क़व्वाली एक सूफ़ीयाना गायन कला है, जिसे 'खयाल' के रूप में भी गाया जाता है। क़व्वाली सूफ़ीवाद की रहस्यवादी परंपराओं से आकार लेती है, यह संगीत का एक ऐसा शक्तिशाली माध्यम है जो मनुष्य की आत्मा को सार्वभौमिक भावना से जोड़ता है। क़व्वाली हमारे देश की एक सशक्त संगीत परंपरा (शास्त्रीय एवं ग़ैर शास्त्रीय) बन गई है।

निज़ामी बंधुओं का शुमार सूफ़ीयाना शैली में क़व्वाली के गायकों में होता है। वे सिकंदराबाद घराने से ताल्लुक़ रखते हैं, जिसने भारतीय संगीत को दो दिग्गज गायक–उस्ताद क़ुदरतउल्ला ख़ान साहब तथा उस्ताद क़िफ़ायतउल्ला ख़ान साहब दिए हैं। अज़ीज़ – उज़्ज़मान के बेटे होने के नाते, ग़ुलाम साबिर निज़ामी तथा ग़ुलाम वारिस निज़ामी ने (स्व.) क़व्वाली सम्राट उस्ताद इनाम अहमद ख़ान 'महबूब रागी' से गायन सीखा। जानेमाने खुरजा घराने के 'पद्म भूषण' से विभूषित हाजी उस्ताद अल्ताफ़ हुसैन ख़ान साहब क्रमशः उनके नाना और मामा थे। इन पारंपरिक घरानों के पूर्वज 700 वर्षों से भी अधिक समय से शीर्षस्थ शास्त्रीय गायक, ध्रुपद गीतकार, संगीतकार तथा कवि/शायर रहे हैं। ग़ुलाम साबिर निज़ामी और ग़ुलाम वारिस निज़ामी (निज़ामी बंधु) पारंपरिक क़व्वाली गायकों के इसी घराने से ताल्लुक़ रखते हैं। निज़ामी बंधुओं को पारंपरिक क़व्वाली और आधुनिक क़व्वाली शैली पर समान अधिकार प्राप्त है।

निज़ामी बंधु ऐसे पहले भारतीय क़व्वाल हैं, जिन्होंने लंदन के रॉयल अल्बर्ट हॉल में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उन्होंने 'रूहानियत फेस्टिवल', 'रंग उत्सव', भोपाल और लखनऊ में 'जश्न–ए–क़व्वाली', दिल्ली में 'ईद की शाम', अमृतसर में 'अमरित दे सुर', 'दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म फेस्टिवल', वृंदावन में 'स्वामी हरिदास सम्मेलन', दरगाह हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया पर 'एक शाम महबूब–ए–इलाही के नाम' तथा मेरठ में 'उर्दू फेस्टिवल' में भी अपनी प्रस्तुतियाँ दी हैं।